चन्द्रकुमार वा मनोरमा।

प्रथम परिच्छेद।

विवाह।

आज ललितपुरी में महामङ्गल उपस्थित हुआ है। जिधर देखिये उधर ही आनन्दध्वनि सुन पड़ती है। घर २ द्वारों पर कदली-स्तम्भ लहलहा रहे हैं। बन्दनवारें लटक रही हैं। छत २ मुड़ेरे २ पर दीपावली कनक-कुसुम-माला सी दीख पड़ती है, कहीं २ मङ्गल के गीत गाये जा रहे हैं, सड़कों पर सुगन्धित जलों के छिड़काव से रास्ता चलनेवालों के दिमाग में तरी पहुंचती है। कहीं २ मधुर मृदङ्ग के साथ वीणा बज रही है, कहीं विपञ्ची,-वंशी प्रभृति वाद्ययन्त्रों के साथ मिली हुई गायकों के कण्ठ से निकली हुई संगीतलहरी सुननेवालों को बेहाल कर देती है। कहीं उत्तमोत्तम कविताओं एवं जयध्वनि की वृष्टि हो रही है। चारों ओर मङ्गल ही मङ्गल है!!!

इससे भी कहीं अधिकतर मङ्गल एवं गानवाद्य की शोभा राजप्रासाद की बैठक में है। राजमहल में एक पांव रखते ही आनन्दस्रोत हृदय में बड़े बेग से प्रवाहित